UNIVERSITY NEWS 05 DECEMBER 2025

AMAR UJALA

लविवि: गिरमिटिया महिलाओं की कहानियां रहीं हाशिए पर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के पश्चिमी इतिहास व समाजशास्त्र विभाग की ओर से आयोजित बृहस्पतिवार को ''गिरमिटियालॉजी'' व्याख्यान श्रृंखला हुई। अंतरराष्ट्रीय स्तर के चार विद्वानों प्रो. डॉ. चान चोएन्नी, डॉ. ऑगस्ट चोएन्नी, शर्ली गोबरधन और बिनारिया मखान ने गिरमिटिया इतिहास, मजदूरों के प्रवासन और डायस्पोरा की जटिलताओं पर विचार रखे। शर्ली गोबरधन ने कहा कि गिरमिटिया महिलाओं की कहानियों को हाशिए पर रखा गया। प्रो. चोएन्नी ने भारत से सूरीनाम तक गए गिरमिटिया मजदूरों की पहचान और उनके सामाजिक विकास पर चर्चा की। डॉ. ऑगस्ट ने प्रवासी उद्यमिता पर बात रखी। बिनारिया मखान ने सूरीनाम के हिंदुस्तानी समुदाय में सामाजिक बदलावों पर अपने अनुभव साझा किए। (माई सिटी रिपोर्टर)

आवेदन का प्रिंटआउट जमा कर चुके विद्यार्थियों की बायोमीट्रिक आज से

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय ने स्नातक और परास्नातक पहले, दूसरे व तीसरे सेमेस्टर के उन विद्यार्थियों को सख्त निर्देश जारी किए हैं जिन्होंने छात्रवृत्ति आवेदन फॉर्म की हार्ड कॉपी कैश काउंटर पर जमा कर दी है। विश्वविद्यालय ने स्पष्ट कर दिया है कि अब बायोमीट्रिक वेरिफिकेशन कराना अनिवार्य है। निर्धारित तिथि पर बायोमीट्रिक नहीं कराने पर छात्रवृत्ति अटक सकती है।

छात्रवृत्ति के लिए अनिवार्य बायोमीट्रिक

कुलसचिव भावना मिश्रा ने सभी वर्गों के विद्यार्थियों के लिए तिथिवार शेड्यूल जारी किया है। बायोमीट्रिक प्रक्रिया 5 दिसंबर से शुरू होगी। विद्यार्थियों को अपनी फॉर्म जमा करने के बाद मिली रिसीविंग अनिवार्य रूप से साथ लानी होगी। प्रक्रिया विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर स्थित कैशियर कार्यालय में बने काउंटर पर होगी।

लविवि में छात्रवृत्ति आवेदन फॉर्म की हार्ड कॉपी जमा करने के लिए बैठे विद्यार्थी। -संवाद

फॉर्म संख्या के आधार पर पूरा शेड्यूल

5 दिसंबर	6 दिसंबर	7 दिसंबर
सामान्य वर्ग: फॉर्म 901–1050, सुबह 11–1:30 ओबीसी: फॉर्म 901–1100, दोपहर 2–4:30	अल्पसंख्यक: फॉर्म 301–400, सुबह 11–1:30 एससी/एसटी: फॉर्म 901–1100, दोपहर 2–4:30	एससी/एसटी: फॉर्म 1101–1300, सुबह 11–1:30
8 दिसंबर	9 दिसंबर	10 दिसंबर
सामान्य वर्ग: फॉर्म 1051–1200, सुबह 11–1:30 ओबीसी: फॉर्म 1101–1300, दोपहर 2–4:30	अल्पसंख्यक: फॉर्म 401–500, सुबह 11–1:30 एससी/एसटी: फॉर्म 1301–1500, दोपहर 2–4:30	सामान्य वर्ग: फॉर्म 1201–1350, सुबह 11–1:30 ओबीसी: फॉर्म 1031–1500, दोपहर 2–4:30
11 दिसंबर	12 दिसंबर	13 दिसंबर
सामान्य वर्ग: फॉर्म 1–700 सुबह 11–1:30 दोपहर 2–4:30	सामान्य वर्ग: फॉर्म 701–1350 , सुबह 11–1:30 दोपहर 2–4:30	ओबीसी : फॉर्म 1–700 सुबह 11–1:30 दोपहर 2–4:30

HINDUSTAN

पान के पत्ते से अल्जाइमर रोग के उपचार का दावा

- लखनऊ विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं का दावा
- शोध दल ने 88 कारगर जीनों की पहचान की

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के बायोजेरोन्टोलॉजी, न्यूरोबायोलॉजी प्रयोगशाला के शोधकर्ताओं ने एक बड़ा दावा किया है। शोधकर्ताओं ने पान के पत्ते में पाए जाने वाले प्राकृतिक यौगिक हाइड्रॉक्सीचाविकोल को अल्जाइमर रोग के संभावित उपचार के लिए बहुलक्ष्यीय औषधि उम्मीदवार के तौर पर चिन्हित किया है।

शोध दल ने 88 ऐसे जीनों की पहचान की है जो इस यौगिक और अल्जाइमर रोग दोनों से जुड़े हैं। प्रमुख अन्वेषक डॉ. नितीश राय ने कहा कि यह निष्कर्ष अभी प्रारंभिक हैं और कम्प्यूटर आधारित अध्ययनों पर आधारित हैं

DAINIK JAGARAN

अल्जाइमर रोग के उपचार में मददगार साबित हो सकते हैं पान के पत्ते

जागरण संवाददाता • लखनऊ : पान के पत्ते अल्जाइमर रोग के उपचार में मददगार साबित हो सकते हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय के जंतु विज्ञान विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. नितीश राय ने अपनी टीम के साथ किए शोध में यह महत्वपूर्ण सफलता पाई है। शोधकर्ताओं ने पान के पत्ते (पादपर बैटिल) में पाए जाने वाले प्राकृतिक यौगिक हाइड्राक्सीचैविकोल को अल्जाइमर रोग के संभावित उपचार के लिए बहु-लक्ष्यीय औषधि उम्मीदवार के रूप में चिन्हित किया है। यह शोध विले द्वारा प्रकाशित अंतरराष्ट्रीय जर्नल आफ एजिंग रिसर्च में प्रकाशित हुआ है।

शोध में इनका भी रहा सहयोग

लवि के शोधार्थी प्रियांक उपाध्याय, सुखारिया विश्वविद्यालय उदयपुर के असिस्टेंट प्रोफेसर सौरभ कुमार सिन्हा, बीएन कालेज उदयपुर से डा. नीरज कुमार, महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी, गोरखपुर के असिस्टेंट प्रोफेसर शशिकांत सिंह।

डा. नितीश राय

• लखनऊ विश्वविद्यालय के जंतु विज्ञान विभाग ने शोध में पाई सफलता

प्रमुख अन्वेषक डा. नितीश राय बताते हैं कि अल्जाइर रोग विश्वभर में डिमेंशिया का प्रमुख कारण है। लंबे समय से चिकित्सा जगत के लिए चुनौती बना हुआ है। लखनऊ विश्वविद्यालय के बायोजेरोटोलाजी एवं न्यूरोबायोलाजी प्रयोगशाला में इसके उपचार को लेकर एक साल तक पान के पत्तों पर शोध किया गया। इस अध्ययन में उन्नत कम्प्यूटेशनल तकनीकों का उपयोग करते हुए यह विश्लेषण किया गया कि हाइड्राक्सीचैविकोल मानव प्रोटीनों के साथ किस प्रकार अंतःक्रिया करता है।

शोध दल ने 88 ऐसे जीनों की पहचान की जो इस यौगिक और अल्जाइमर रोग दोनों से जुड़े हैं। इनमें से तीन प्रमुख प्रोटीन कैटेचोल ओ मेथाइलट्रांसफरेज, हीट शाक प्रोटीन 90 अल्फा और ग्लिसरएल्डिहाइड-3-फास्फेट डिहाइड्रोजनेज मुख्य रूप से उभरे। ये प्रोटीन मस्तिष्क संकेतों, टाउ एवं अमाइलाइड प्रसंस्करण तथा न्यूरांस की जीवित रहने की क्षमता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मालिक्यूलर डाकिंग और दीर्घकालिक सिमुलेशन अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि हाइड्राक्सीचाविकोल इन प्रोटीनों से मजबूती और स्थिरता से जुड़ता है। इससे संकेत मिलता है कि यह यौगिक एक साथ कई अल्जाइमर संबंधी मार्गों को प्रभावित कर सकता है। साथ ही हाइड्राक्सीचैविकोल में अनुकूल ड्रग-लाइक गुण मौजूद हैं, जिससे यह एक संभावित मौखिक दवा के रूप में उभर सकता है। डा. नितीश राय बताते हैं कि ये निष्कर्ष प्रारंभिक और कंप्यूटर आधारित हैं। हाइड्राक्सीचैविकोल को रोगियों के उपचार विकल्प के रूप में परखने से पहले व्यापक प्रयोगशाला एवं नैदानिक परीक्षण आवश्यक होंगे।

'इतिहास में नहीं दर्ज हो सकीं गिरमिटिया महिलाओं की कई अहम कहानियां'

जासं • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के पश्चिमी इतिहास विभाग और समाजशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार को गिरमिटियालाजी व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया गया। डीपी मुकर्जी सभागार में हुए व्याख्यान में नीरदलैंडस के प्रो. डा. चंदर्सेन ई.एस. (चान) चोएन्नी, डा. आगस्ट चोएन्नी, शर्ली गोबर्धन और बिनारिया मखान शामिल हुए। यह सभी हिंदुस्तानी प्रवासन और डायस्पोरा अध्ययन में अपने उल्लेखनीय योगदान के लिए जाने जाते हैं।

मुख्य वक्ता इतिहासकार प्रो. चान चोएन्नी ने हिंदुस्तानी पहचान के ऐतिहासिक विकास पर चर्चा की। उन्होंने भारत से सूरीनाम तक गिरमिटिया मजदूरों के सफर और उनके वंशजों के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन को विस्तार से समझाया। उन्होंने अपनी हालिया पुस्तक हिस्ट्री आफ हिंदोस्तानीज 1873–2023 का भी उल्लेख किया। यह किताब आनलाइन निःशुल्क उपलब्ध है। शर्ली गोबर्धन ने लैंगिक दृष्टिकोण से गिरमिटिया महिलाओं की भूमिका पर बात की। बताया कि कैसे सूरीनाम देश में गिरमिटिया महिलाओं ने परिवार, शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता को आकार दिया, लेकिन उनकी कई कहानियां इतिहास में दर्ज नहीं हो पाईं।

लवि में आयोजित गिरमिटियालाजी व्याख्यान श्रृंखला में शामिल प्रो. डा. चंदर्सेन ई.एस. (चान) चोएन्नी, डा. आगस्ट चोएन्नी, शर्ली गोबर्धन और बिनारिया मखान • सौ. लवि

डा. आगस्ट चोएन्नी ने गिरमिटिया विरासत और प्रवासी उद्यमिता पर अपना शोध प्रस्तुत किया। उन्होंने विभिन्न पीढ़ियों में सामुदायिक नेटवर्क, आर्थिक अनुकूलन और अभिलेखीय संरक्षण के महत्व पर भी बात की। जनसांख्यिकी विशेषज्ञ बिनारिया मखान ने सूरीनाम की हिंदुस्तानी समुदाय में प्रजनन पैटर्न और सामाजिक परिवर्तनों के बारे में बताया। साथ ही अपनी नानी, जो एक गिरमिटिया की बेटी और सफल उद्यमी थीं, उनकी कहानी साझा की। कार्यक्रम का समापन एक संवाद सत्र भी हुआ। कार्यक्रम की संयोजक प्रो. अर्चना तिवारी ने सभी का आभार जताया।

छात्रवृत्ति प्रतिपूर्ति आवेदन के लिए बायोमीट्रिक प्रक्रिया आज से

जासं • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने सत्र 2025-26 की दशमोत्तर छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए आवेदन करने वालों को बायोमीट्रिक की प्रक्रिया पूरी करने का एक और मौका दिया है। ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने कैशियर कार्यालय में काउंटर पर आवेदन पत्र जमा करने के बाद रिसीविंग नंबर प्राप्त कर लिया है, उनको रिसीविंग के साथ कुलसचिव कार्यालय के छात्रवृत्ति अनुभाग में बायोमीट्रिक लगाने के लिए उपस्थित होना पड़ेगा। यह प्रक्रिया शुक्रवार से शुरू होगी। बिना बायोमीट्रिक आवेदन पत्र समाज कल्याण विभाग को अग्रसारित नहीं किए जाएंगे। कुलसचिव डा. भावना मिश्रा ने इसकी विस्तृत समय सारिणी जारी की है।

इग्नू में पुन : पंजीकरण शुरू

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) ने सभी ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग (ओडीएल) और आनलाइन कार्यक्रमों के तहत जनवरी, 2026 सत्र के लिए पुन: पंजीकरण की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इग्नू लखनऊ के वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक डा. अनिल कुमार मिश्र ने बताया कि पुन: पंजीकरण की अंतिम तिथि 15 जनवरी तक निर्धारित की गई है। विद्यार्थी दी गई अवधि में पंजीकरण करा सकते हैं।

विद्यार्थियों की बायोमीट्रिक 11 से 18 दिसंबर तक मुख्य परिसर तक होगी।

34 केंद्रों पर एलएलबी की सेमेस्टर परीक्षाएं: लवि ने एलएलबी तीन वर्षीय और एलएलबी इंटीग्रेटेड विषम सेमेस्टर परीक्षाओं के लिए बनाए गए केंद्रों की संशोधित सूची जारी की है। अब लखनऊ, हरदोई, रायबरेली, सीतापुर और लखीमपुर खीरी मिलाकर 34 केंद्रों पर परीक्षा होगी। इन पर 51 कालेजों के छात्र-छात्राएं परीक्षा देने के लिए आवंटित किए गए हैं। वहीं, केंद्रों की निगरानी के लिए नोडल केंद्रों की संख्या 13 कर दी गई है। केंद्रों की सूची की वेबसाइट पर अपलोड की गई है।

NBT

LU के शोध में दावा- अल्जाइमर में कारगर हो सकता पान का पत्ता

■ NBT न्यूज, लखनऊ : एलयू के बायो जेरोन्टॉलजी व न्यूरोबॉयलजी प्रयोगशाला के शोधकर्ताओं ने एक बड़ा दावा किया है। शोधकर्ताओं ने पान के पत्ते में पाए जाने वाले प्राकृतिक यौगिक हाइड्रॉक्सीचाविकोल को अल्जाइमर रोग के संभावित उपचार के लिए बहुलक्ष्यीय औषधि के तौर पर चिह्नित किया है।

शोध दल ने 88 ऐसे जीनों की पहचान की है, जो हाइड्रॉक्सीचाविकोल और अल्जाइमर रोग दोनों से जुड़े हैं। प्रमुख अन्वेषक डॉ. नितीश राय ने कहा कि यह निष्कर्ष अभी प्रारंभिक हैं और कंप्यूटर आधारित अध्ययन पर आधारित हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि हाइड्रॉक्सीचाविकोल को रोगियों के उपचार विकल्प के रूप में परखने से पहले व्यापक प्रयोगशाला परीक्षण जरूरी है।

AMRIT VICHAR

डॉ. अमरजीत बने बंगाल योग के सदस्य

अमृत विचार, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय के योग विभाग, फैकल्टी ऑफ़ योगा एंड अल्टरनेटिव मेडिसिन के शिक्षक व कॉर्डिनेटर डॉ. अमरजीत यादव को बर्दवान विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल के योग पाठ्यक्रम के बोर्ड ऑफ़ स्टडीज का सदस्य नामित किया गया है। डॉ. यादव देश के कई विश्विद्यालयों, संस्थानों के विभिन्न समितियों के सदस्य है और इन्होंने योग विषय के स्नातक, परास्नातक तथा डिप्लोमा के पाठ्यक्रमों का निर्माण किया है। उत्तर प्रदेश में बी.टेक एवं पॉलीटेकनीक पाठ्यक्रम में योग विषय को शामिल करने वाली विशेषज्ञ समिति के सदस्य भी रह चुके हैं।

शोध | अल्जाइमर और उससे होने वाले डिमेंशिया के इलाज में लखनऊ विश्वविद्यालय ने उम्मीद की लौ

पान के पत्ते से होगा अल्जाइमर रोग का उपचार

हाइड्रॉक्सीचाविकोल की रासायनिक संरचना।

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: दुनिया भर के चिकित्सा जगत के लिए चुनौती बने अल्जाइमर रोग और उससे होने वाले डिमेंशिया बीमारी के इलाज में लखनऊ विश्वविद्यालय ने उम्मीद की लौ जगाई है। विश्वविद्यालय के प्राणी विज्ञान विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. नितीश राय ने पान के पत्ते में पाए जाने वाले तत्वों से अल्जाइमर के इलाज का दावा किया है। विश्वविद्यालय के बायोजेरोन्टोलॉजी व न्यूरोबायोलॉजी प्रयोगशाला ने सिद्ध कर दिया है कि पान के पत्ते (पीपर बीटल) में पाए जाने वाले प्राकृतिक यौगिक हाइड्रॉक्सीचाविकोल को अल्जाइमर रोग के उपचार के लिए बहुलक्ष्यीय औषधि तैयार की जा सकती है।

अल्जाइमर रोग डिमेंशिया का प्रमुख कारण है। प्रोफेसर नितीश ने नए अध्ययन में उन्नत कम्प्यूटेशनल तकनीकों का उपयोग कर ये विश्लेषण किया गया है कि हाइड्रॉक्सीचाविकोल मानव प्रोटीनों के साथ किस प्रकार अंत:क्रिया करता है। शोध दल ने 88 ऐसे जीन की पहचान की जो इस यौगिक और अल्जाइमर रोग से जुड़े हैं।

प्रो. डॉ. नितीश राय।

इनमें तीन प्रमुख प्रोटीन सीओएमटी, एचएसपी90एए1 और जीएपीडीएच बड़े खोत के रूप में सामने आए हैं। ये प्रोटीन मस्तिष्क संकेतों, टाउ एवं अमाइलॉइड प्रसंस्करण तथा न्यूरॉन्स की जीवित रहने की क्षमता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मॉलिक्यूलर डॉकिंग और दीर्घ कालिक सिमुलेशन अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि हाइड्रॉक्सीचाविकोल इन प्रोटीनों से मजबूती और स्थिरता से जुड़ता है। उन्होंने कहा कि यह परिणाम भविष्य में पान पत्ते के घटक को एक सुलभ और किफायती रूप में आगे बढ़ाने के लिए ठोस वैज्ञानिक आधार प्रदान करते हैं।

विश्वविद्यालय का यह शोध न केवल भारतीय पारंपरिक पौधों की औषधीय क्षमता को उजागर करता है, बल्कि वैश्विक स्तर पर अल्जाइमर रोग से लड़ने की दिशा में नई आशा भी जगाता है।

प्रोटीन का गुच्छा, सूजन और तनाव प्रमुख कारण

- अल्जाइमर रोग की जटिलता इस बात से स्पष्ट होती है कि इसमें प्रोटीन का गुच्छा बनना, सूजन और ऑक्सीडेटिव तनाव जैसी अनेक प्रक्रियाएं होती हैं। यही कारण है कि एकल-लक्ष्यीय दवाएं इसमें ज्यादातर बेअसर साबित होती हैं। जबकि लखनऊ विश्वविद्यालय का शोध दर्शाता है कि एक सुरक्षित, पौध-आधारित अणु एक साथ कई मार्गों पर कार्य कर सकता है। यह आधुनिक चिकित्सा अनुसंधान की उस प्रवृत्ति से मेल खाता है जिसमें बहु-लक्ष्यीय व हर्बल-आधारित उपचारों की जटिल मस्तिष्क रोगों के लिए अधिक प्रभावी माना जा रहा है।

हाइड्रॉक्सीचाविकोल में औषधीय गुण

- यह यौगिक एक साथ कई अल्जाइमर-संबंधी मार्गों को प्रभावित कर सकता है। विश्लेषण से यह भी पता चला कि हाइड्रॉक्सीचाविकोल में अनुकूल "ड्रग-लाइक" गुण मौजूद हैं और इसका अवशोषण भी अच्छा अनुमानित किया गया है। जिससे यह एक संभावित मौखिक दवा के रूप में उभर सकता है।

लविवि में गिरमिटिया विरासत कार्यक्रम में हिस्सा लेते शिक्षक।

गिरमिटिया विरासत पर हुआ कार्यक्रम

अमृत विचार, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय के पश्चिमी इतिहास विभाग और समाजशास्त्र विभाग द्वारा संयुक्त रूप से "गिरमिटियालॉजी" व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रो. डॉ. चंदर्सेन ई.एस. (चान) चोएन्नी, डॉ. ऑगस्ट चोएन्नी, शर्ली गोबरधन और बिनारिया मखान ने हिस्सा लिया। ये सभी हिंदुस्तानी प्रवासन और डायस्पोरा अध्ययन में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाने जाते हैं। मुख्य वक्तव्य देते हुए प्रो. चान चोएन्नी ने हिंदुस्तानी पहचान के ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश डाला। नीदरलैंड्स में स्थित प्रख्यात इतिहासकार ने भारत से सूरिनाम तक गिरमिटिया मज़दूरों के सफर और उनके वंशजों के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन को विस्तार से समझाया।

AAJ

पान के पत्ते से अल्जाइमर रोग के उपचार की नई उम्मीद

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के बायो जेरोन्टोलॉजी एवं न्यूरोबायोलॉजी प्रयोगशाला ने एक उल्लेखनीय वैज्ञानिक उपलब्धि हासिल की है। शोधकर्ताओं ने पान के पत्ते ;च्यचमत इमजसमद्ध में पाए जाने वाले प्राकृतिक यौगिक हाइड्रॉक्सीचाविकोल को अल्जाइमर रोग के संभावित उपचार हेतु बहु-लक्ष्यीय औषधि उम्मीदवार के रूप में चिन्हित किया है। अल्जाइमर रोग, जो विश्वभर में डिमेंशिया का प्रमुख कारण है, लंबे समय से चिकित्सा जगत के लिए चुनौती बना हुआ है। इस अध्ययन में उन्नत कम्प्यूटेशनल तकनीकों का उपयोग करते हुए यह विश्लेषण किया गया कि हाइड्रॉक्सीचाविकोल मानव प्रोटीनों के साथ किस प्रकार अंत:क्रिया करता है। शोध दल ने 88 ऐसे जीनों की पहचान की जो इस यौगिक और अल्जाइमर रोग दोनों से जुड़े हैं। यह जानकारी देते हुए प्रमुख अन्वेषक डॉ. नितीश राय ने कहा कि ये निष्कर्ष अभी प्रारंभिक हैं और कम्प्यूटर आधारित अध्ययनों पर आधारित हैं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि हाइड्रॉक्सीचाविकोल को रोगियों के उपचार विकल्प के रूप में परखने से पहले व्यापक प्रयोगशाला एवं नैदानिक परीक्षण आवश्यक होंगे।

I NEXT

पान में छिपा है अल्जाइमर रोग का उपचार

लखनऊ विश्वविद्यालय के जंतु विज्ञान विभाग ने शोध में पाई सफलता

तीन प्रमुख प्रोटीन चिन्हित

LUCKNOW (4 DEC): पान के पत्ते अल्जाइमर रोग के उपचार में मददगार साबित हो सकते हैं. लखनऊ यूनिवर्सिटी के जंतु विज्ञान विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. नितीश राय ने टीम संग किए रिसर्च में यह सफलता पाई है. उन्होंने पान के पत्ते में पाए जाने वाले प्राकृतिक यौगिक हाइड्राक्सीचैविकोल को अल्जाइमर रोग के संभावित उपचार के लिए बहु-लक्ष्यीय औषधि उम्मीदवार के रूप में चिन्हित किया है. यह शोध विले द्वारा प्रकाशित अंतरराष्ट्रीय जर्नल आफ एजिंग रिसर्च में प्रकाशित हुआ है.

एक साल किया रिसर्च

प्रमुख अन्वेषक डा. नितीश राय बताते हैं कि अल्जाइर रोग विश्वभर में डिमेंशिया का प्रमुख कारण है. टीम ने 88 ऐसे जीनों की पहचान की जो इस यौगिक और अल्जाइमर रोग दोनों से जुड़े हैं. इनमें से तीन प्रमुख प्रोटीन कैटेचोल ओ मेथाइलट्रांसफरेज, हीट शाक प्रोटीन 90 अल्फा और ग्लिसरएल्डिहाइड-3-फास्फेट डिहाइड्रोजनेज मुख्य रूप से उभरे. ये प्रोटीन मस्तिष्क संकेतों, टाउ एवं अमाइलाइड प्रसंस्करण तथा न्यूरांस की जीवित रहने की क्षमता में भूमिका निभाते है. मालिक्यूलर डाकिंग और दीर्घकालिक सिमुलेशन अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि हाइड्राक्सीचैविकोल इन प्रोटीनों से मजबूती और स्थिरता से जुड़ता है. इससे संकेत मिलता है कि यह यौगिक एक साथ कई अल्जाइमर संबंधी मार्गों को प्रभावित कर सकता है.

एलयू के बायोजेरोटोलाजी एवं न्यूरोबायोलाजी लैब में इसके टीटमेंट को लेकर एक साल तक पान के पत्तों पर रिसर्च किया. इस अध्ययन में उन्नत कम्प्यूटेशनल तकनीकों का यूज करते हुए यह विश्लेषण किया गया कि हाइड्राक्सीचैविकोल मानव प्रोटीनों के साथ किस प्रकार अंत:क्रिया करता है.

इनका रहा प्रमुख सहयोग

एलयू के शोधार्थी प्रियांक उपाध्याय, सुखारिया विश्वविद्यालय उदयपुर के असिस्टेंट प्रोफेसर सौरभ कुमार सिन्हा, बीएन कालेज उदयपुर से डा. नीरज कुमार, महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी, गोरखपुर के असिस्टेंट प्रोफेसर शशिकांत सिंह.

निष्कर्ष प्रारंभिक हैं

इसके साथ ही हाइड्राक्सीचैविकोल में अनुकूल ड्रग-लाइक गुण मौजूद है, जिससे यह एक संभावित मौखिक दवा के रूप में उभर सकता है. डा. नितीश राय बताते हैं कि ये निष्कर्ष प्रारंभिक और कंप्यूटर आधारित हैं. हाइडासक्सीचैविकोल को रोगियों के उपचार विकल्प के रूप में परखने से पहले व्यापक प्रयोगशाला एवं नैदानिक परीक्षण आवश्यक होंगे.